Feel, Imagine, Think

Badalti Duniya [Hindi]

Vikram Bhaskar, MD

Assistant Professor, Pediatrics, GTB Hospital, Delhi

Corresponding Author:
Vikram Bhaskar
Assistant Professor, Pediatrics
GTB Hospital, Delhi
Email: vikrambhaskar8884 at gmail dot com

Received: 21-JUL-2020 Accepted: 28-JUL-2020 Published: 31-JUL-2020

Artwork credit:
Haryax Pathak, MBBS
Former Intern
Pramukh Swami Medical College,
Karamsad, Gujarat

पिछले दिनों ये दुनिया कुछ यूँ बदली है ,
लोग नक़ाब लगाने लगे हैं नक़ली चेहरों पर ।

ज़हर पहले से ही काफ़ी था इस शहर की हवाओं में ,
ये पहरेदारी नयी–नयी है तुम्हारी साँसो पर ।

वो वापस लौट पड़ा है अपने गाँव की ओर ,
उसे भरोसा नहीं रहा अब शहरी आकाओं पर ।

फ़ासला पहले से ही काफ़ी था उन दोनो के दरमियाँ ,
तुमने कुछ लकीरें ही तो खींची हैं ज़मीन पर ।

वो घर आ कर भी घरवालों से नहीं मिलता ,
अपनों को खो देने का डर शायद हावी है उसके यक़ीन पर ।

Cite this article as: Bhaskar V. Badalti duniya [Hindi]. RHiME. 2020;7:179.